

## पाठ 67

1. गतसमनी के बगीचे में, यीशु ने प्रार्थना करना शुरू कर दिया, क्योंकि वह बहुत परेशान था। यीशु को बहुत परेशान क्यों किया गया था?

-क्योंकि यीशु जानता था कि उसके सामने जो दुख था वह उससे भी ज्यादा भयानक था जितना किसी ने कभी नहीं झेला।

2. यीशु को गिरफ्तार करने के लिए तलवारों और लाठियों से लैस लोगों की भीड़ का नेतृत्व कौन कर रहा था?

-यहूदा।

3. यीशु को गिरफ्तार करने के लिए यहूदा का नेतृत्व कौन कर रहा था?

-शैतान।

4. इन दिनों, शैतान किसकी अगुवाई करता है?

-सभी लोग जो यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में मानने से इनकार करते हैं, उनका नेतृत्व शैतान द्वारा किया जाता है।

5. यीशु के सभी चेले क्यों भाग गए?

-चेले डर गए और समझ नहीं पा रहे थे कि यीशु को क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है।

6. शिष्यों को क्या समझ में नहीं आया?

-चेलों को समझ में नहीं आया कि अगर यीशु को गिरफ्तार कर लिया गया और उसे मार दिया गया तो वह उद्धारकर्ता कैसे बन पाएगा।

7. यीशु को गिरफ्तार करने वाले लोग उसे कहाँ ले गए?

-यीशु को गिरफ्तार करने वाले लोग उसे महायाजक के पास ले गए।

8. यहूदी अगुवे यीशु में कुछ भी गलत क्यों नहीं खोज पाए?

-क्योंकि यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया था।

-क्योंकि यीशु ने पाप नहीं किया था।

8. जब महायाजक ने यीशु से बात की और उससे पूछा कि क्या वह परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो यीशु ने क्या उत्तर दिया?

-यीशु ने उत्तर दिया और कहा, "मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते देखोगे।"

9. महायाजक ने क्यों कहा कि यीशु को मार डाला जाना चाहिए?

-महायाजक ने कहा कि यीशु ने परमेश्वर को श्राप दिया था।

10. क्या यीशु ने परमेश्वर को शाप दिया था?

-नहीं।

-जब महायाजक और यहूदी नेताओं ने यीशु को मौत की सज़ा सुनायी, तो वे उसे पीलातुस के पास ले गए।

आइए पढ़ें मरकुस 15:1

1- भोर होते ही प्रधान याजक, पुरनियों, शास्त्रियों, और सारी महासभा के साथ एक निर्णय पर पहुंचे। वे यीशु को बान्धकर ले गए, और पीलातुस के हाथ में कर दिया।

-पीलातुस कौन था?

-पिलातुस यहूदिया का मुखिया था जिसे रोम के राजा कैसर ने नियुक्त किया था।

-यहूदियों को यीशु को मारने के लिए पिलातुस से अनुमति लेनी पड़ी।

-जब यीशु को पीलातुस के सामने लाया गया, तो पिलातुस ने यीशु से एक प्रश्न पूछा।

आइए पढ़ें मरकुस 15:2

2-"क्या आप यहूदियों के राजा हैं?" पिलातुस ने पूछा। "हाँ, जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है," यीशु ने उत्तर दिया।

-यीशु ने क्यों कहा कि वह यहूदियों का राजा था?

-क्योंकि यीशु राजा दाऊद का वंशज था।

आइए पढ़ें मरकुस 15:3-5

3-महायाजकों ने उस पर बहुत सी बातें करने का आरोप लगाया।

4-तब पीलातुस ने फिर उससे पूछा, “क्या तू उत्तर नहीं देगा? देखें कि वे आप पर कितने आरोप लगा रहे हैं।”

5-परन्तु यीशु ने कोई उत्तर न दिया, और पीलातुस चकित रह गया।

-भले ही लोगों ने यीशु पर झूठा आरोप लगाया हो, यीशु चुप रहा और उसने कोई जवाब नहीं दिया।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता चुप रहेगा जब उस पर झूठा आरोप लगाया जाएगा।

-फसह के पर्व के दौरान, यहूदियों के लिए एक कैदी को रिहा करने की पिलातुस की प्रथा थी।

-इसलिए पीलातुस ने यहूदियों से पूछा कि क्या वे चाहते हैं कि वह यीशु को छोड़ दे।

आइए पढ़ें मरकुस 15:6-11

6-अब यह पर्व के समय एक बंदी को रिहा करने की प्रथा थी, जिसके लिए लोगों ने अनुरोध किया था।

7-बड़अब्बा नाम का एक व्यक्ति उन विद्रोहियों के साथ जेल में था, जिन्होंने विद्रोह में हत्या की थी।

8-भीड़ ने आकर पीलातुस से उनके लिए वही करने को कहा जो वह आमतौर पर करता था।

9-"क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?"  
पिलातुस ने पूछा,

10-यह जानकर कि महायाजकों ने ईर्ष्या के कारण यीशु को उसके हाथ में कर दिया था।

11-किन्तु प्रधान याजक ने भीड़ को भड़काया कि पिलातुस ने बरअब्बा को छोड़ दिया।

-पीलातुस जानता था कि यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया है।

-पीलातुस जानता था कि यहूदी नेताओं ने यीशु को गिरफ्तार किया था क्योंकि वे उससे ईर्ष्या करते थे।

-इसलिए, पीलातुस को उम्मीद थी कि यहूदी यीशु को रिहा करने का चुनाव करेंगे।

-इसके बजाय, मुख्य पुजारी ने भीड़ को उकसाया कि पीलातुस ने यीशु के बजाय बरअब्बा, एक हत्यारे को रिहा कर दिया।

-तब पिलातुस ने यहूदियों से एक प्रश्न पूछा।



आइए पढ़ें मरकुस 15:12-14

12-फिर जिसे तू यहूदियों का राजा कहता है, उसके साथ मैं क्या करूँ?  
पिलातुस ने उनसे पूछा।

13-"उसे क्रूस पर चढ़ाओ!" उन लोगों ने चिल्लाया।

14-"क्यों? उसने क्या अपराध किया है?" पिलातुस ने पूछा। परन्तु वे और भी ऊँचे स्वर से चिल्लाए, "उसे क्रूस पर चढ़ा!"

-भले ही यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया था, भीड़ यीशु से नफरत करती थी और चाहती थी कि यीशु को सूली पर चढ़ाया जाए।

-जैसा कि परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता से बिना किसी कारण के घृणा की जाएगी।

-भीड़ यीशु को सूली पर चढ़ाना चाहती थी।

-क्रूस क्या है?

-यह किसी के हाथों और पैरों को सूली पर ठोकना और उन्हें तब तक सूली पर छोड़ना है जब तक वे मर नहीं जाते।

-क्रूसिफिकेशन मौत का सबसे खराब रूप है जिसका इस्तेमाल रोमन अपराधियों के सबसे बुरे रूप को मारने के लिए करते थे।

-फिर, पीलातुस ने आज्ञा दी कि यीशु को कोड़े मारे।

आइए पढ़ें मरकुस 15:15

15-पीलातुस ने भीड़ को संतुष्ट करने के लिए बरअब्बा को उनके लिए रिहा कर दिया। उसने यीशु को कोड़े मारे और उसे सूली पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

-जब रोम के लोग किसी को कोड़े मारते थे, तो वे नुकीले धातु के टुकड़ों और लैशेस से बंधी हड्डी के साथ कई कोड़ों के चाबुक का इस्तेमाल करते थे।

-रोमन जब किसी को चाबुक मारते थे तो उनकी पीठ इतनी कट जाती थी कि वे अक्सर मर जाते थे।

-यीशु को कोड़े मारने के बाद, सैनिकों ने उसका मज़ाक उड़ाया।

आइए पढ़ें मरकुस 15:16-20

16-सिपाहियों ने यीशु को महल में ले जाकर सिपाहियों की सारी मण्डली बुलवा ली।

17-और उन्होंने उस पर बैजनी वस्त्र पहिनाया, और कांटोंका मुकुट गूथकर उस पर लगाया।

18-और वे उसे पुकारने लगे, "हे यहूदियों के राजा, जय हो!"

19-वे बार-बार लाठी से उसके सिर पर वार करते और उस पर थूकते थे। उन्होंने घुटनों के बल गिरकर उन्हें श्रद्धांजलि दी।

20-और जब उन्होंने उसका ठट्ठा किया, तब उन्होंने बैजनी वस्त्र उतारकर उसी के वस्त्र उस पर पहिनाए। वे उसे सूली पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए।

-सैनिकों ने यीशु को पीटा और उस पर थूक दिया।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता को पीटा जाएगा और उस पर थूका जाएगा।

-क्योंकि लोग राजाओं के सामने घुटने टेककर उनका सम्मान करते थे, सैनिकों ने यीशु के सामने घुटने टेककर उनका मज़ाक उड़ाया।

-क्योंकि राजाओं ने बैंगनी रंग के कपड़े पहने थे, सैनिकों ने यीशु को बैंगनी रंग के कपड़े पहनाकर उसका मज़ाक उड़ाया।

-क्योंकि राजाओं ने भी अपने सिर पर सोने के मुकुट पहने थे, सैनिकों ने यीशु के सिर पर कांटों का ताज लगाकर उनका मज़ाक उड़ाया।

-जैसा कि परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता का मज़ाक उड़ाया जाएगा।

-कांटों का ताज किसका प्रतीक था?

-कांटों का ताज परमेश्वर के श्राप का प्रतीक था।

-जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो परमेश्वर ने पृथ्वी को श्राप दिया और कहा कि काँटे बढ़ेंगे।

-जब सैनिकों ने कांटों का ताज यीशु के सिर पर रखा, तो यह किसका संकेत था?

-एक संकेत है कि यीशु परमेश्वर का श्राप ले जाएगा।

आइए पढ़ें मरकुस 15:21-22

21-सिकंदर और रूफुस का पिता शमौन कुरेनी का एक मनुष्य उस देश से होकर जा रहा था, और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने को विवश किया।

22-वे यीशु को गुलगोथा (जिसका अर्थ है खोपड़ी का स्थान) नामक स्थान पर ले आए।

-इसके बाद सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए यरूशलेम के बाहर गोलगोथा नामक एक पहाड़ी पर ले गए।

-पहाड़ी पर, सैनिकों ने क्रॉस को जमीन पर रख दिया, और फिर यीशु को क्रॉस के ऊपर रख दिया।

-फिर, सैनिकों ने यीशु के हाथों को सूली की चोटी पर और उसके पैरों को कीलों से सूली के नीचे तक कील ठोक दिया।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता के हाथ और पैर छिदवाए जाएंगे।

-जब सैनिकों ने समाप्त कर लिया, तो उन्होंने यीशु के साथ एक सीधी स्थिति में सूली पर चढ़ा दिया।

-क्या आपको याद है कि यीशु ने नीकुदेमुस से क्या कहा था?

-यीशु ने कहा कि जैसे मूसा ने सांप को खंबे पर चढ़ा दिया ताकि लोग बच जाएं, वैसे ही उद्धारकर्ता को भी ऊपर उठाया जाएगा ताकि लोग बच सकें।

आइए पढ़ें मरकुस 15:23-24

23-तब उन्होंने उसे गन्धरस मिला हुआ दाखमधु चढ़ाया, परन्तु उसने नहीं लिया।

24-और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। उसके कपड़ों को बाँटते हुए, उन्होंने यह देखने के लिए चिट्ठी डाली कि प्रत्येक को क्या मिलेगा।



-कुछ महिलाओं ने दर्द को कम करने में मदद करने के लिए यीशु को लोहबान के साथ मिश्रित शराब की पेशकश की, लेकिन यीशु ने मना कर दिया।

-जिन सैनिकों ने यीशु को सूली पर चढ़ा दिया था, उन्होंने उनके लिए यीशु के कपड़े बांटने के लिए चिट्ठी डाली।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, वे उद्धारकर्ता के कपड़ों के लिए चिट्ठी डालेंगे।

आइए पढ़ें मरकुस 15:25-27

25-यह तीसरा घंटा था जब उन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया।

26-उनके खिलाफ आरोप का लिखित नोटिस पढ़ा: यहूदियों का राजा।

27-उन्होंने उसके साथ दो डाकुओं को क्रूस पर चढ़ाया, एक उसकी दाहिनी ओर, और एक उसकी बाईं ओर।

-दो अन्य लोगों को यीशु के साथ सूली पर चढ़ाया गया, एक को उनकी दाईं ओर और एक को उनकी बाईं ओर।

-वे बुरे आदमी थे।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता बुरे लोगों के साथ मर जाएगा।

आइए पढ़ें मरकुस 15:29-32

29-जो आगे-आगे उस की निन्दा करते, सिर हिलाते और कहते, "अरे! तुम जो मन्दिर को ढा देने और तीन दिन में बनाने वाले हो,

30-क्रूस पर से उतर आओ और अपने आप को बचाओ!"

31-इसी प्रकार महायाजकों और धर्मशास्त्रियों ने आपस में उसका ठट्ठा किया। "उसने दूसरों को बचाया," उन्होंने कहा, "लेकिन वह खुद को नहीं बचा सकता!"

32-यह मसीह, इस्राएल का यह राजा, अब क्रूस पर से उतर आए, कि हम देखें और विश्वास करें।" जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी उस पर अपमान किया।

-यीशु ने कहा था कि अगर यहूदी मंदिर को नष्ट कर देंगे तो ईसा तीन दिन में इसे फिर से खड़ा कर देंगे।

-क्या यीशु उस पत्थर के मंदिर के बारे में बात कर रहे थे जिसे यहूदियों ने यरूशलेम में बनाया था?

-नहीं।

-यीशु किस मंदिर की बात कर रहे थे?

-यीशु अपने शरीर के बारे में बात कर रहे थे।

-यीशु कह रहा था कि यदि यहूदी उसे सूली पर चढ़ाकर नष्ट भी कर देंगे, तो भी वह तीन दिनों में जी उठेगा।

आइए पढ़ें मरकुस 15:33

33-छठवें घंटे पर नवें घंटे तक सारे देश में अन्धकार छा गया।

-पूरे देश में तीन घंटे तक घोर अँधेरा क्यों था?

-तीन घंटे का अंधेरा एक संकेत था।

-पूरे देश में तीन घंटे के अंधेरे का क्या संकेत था?

-परमेश्वर पिता यीशु को क्रूस पर छोड़ रहे थे।

आइए पढ़ें मरकुस 15:34

34-और नौवें घंटे में यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, "एलोई, एलोई, लमा शबक्तनी?" - जिसका अर्थ है, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

-जब पिता परमेश्वर ने यीशु को क्रूस पर छोड़ दिया, तो यीशु चिल्लाया।

-पिता परमेश्वर ने यीशु को क्यों त्याग दिया?

-क्या यीशु ने कभी कुछ गलत किया?

-नहीं।

-तो फिर परमेश्वर पिता ने यीशु को क्यों त्याग दिया?

-परमेश्वर पिता यीशु को आपके पापों, मेरे पापों और सभी लोगों के पापों के लिए दंड दे रहा था।

-क्योंकि परमेश्वर पिता हमारे पापों के लिए यीशु को दंड दे रहे थे, परमेश्वर पिता ने यीशु को क्रूस पर छोड़ दिया।

-अदन की वाटिका में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा के साथ क्या कहा था यदि वे उस फल को खा लें जिसे परमेश्वर ने न खाने की आज्ञा दी थी?

-वे मर जाएंगे।

-क्योंकि आदम और हव्वा ने पाप किया, वे परमेश्वर से अलग होकर मर गए।

-अब, यीशु को पिता परमेश्वर से अलग किया जा रहा था।

आइए पढ़ें मरकुस 15:35-36

35-जब पास खड़े लोगों में से कितनों ने यह सुना, तो उन्होंने कहा, सुन, वह एलिय्याह को बुला रहा है।

36-फिर एक मनुष्य दौड़ा, और सिरके में एक स्पंज भरकर एक डंडी पर रखा, और यीशु को पीने को दिया। "अब उसे अकेला छोड़ दो। देखते हैं कि एलिय्याह उसे नीचे उतारने के लिए आता है या नहीं," उसने कहा।

-यीशु को सूली पर मरते हुए देखने वालों को लगा कि यीशु एलिय्याह को बुला रहे हैं।

-यीशु एलिय्याह को नहीं बुला रहा था।

-यीशु परमेश्वर पिता को पुकार रहा था।

-यीशु पिता परमेश्वर को क्यों पुकार रहा था?



-क्योंकि परमेश्वर पिता ने यीशु को त्याग दिया, और यह एक भयानक सजा थी।

-पिता परमेश्वर और यीशु कितने समय से एक साथ थे?

-हमेशा के लिए।

-क्या कभी ऐसा समय था जब पिता परमेश्वर और यीशु एक साथ नहीं थे?

-नहीं।

-क्योंकि यह पहली और एकमात्र बार था जब पिता परमेश्वर और यीशु एक साथ नहीं थे, यीशु चिल्लाया।

-परमेश्वर पिता से अलग होना दुनिया में सबसे भयानक सजा है।

आइए पढ़ें मरकुस 15:37

37- जोर-जोर से रोने के साथ यीशु ने अंतिम सांस ली।

-यीशु की क्रूस पर मृत्यु हो गई।

-यीशु के मरने के बाद मंदिर में क्या हुआ?

आइए पढ़ें मरकुस 15:38

38-मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।

-मंदिर के पर्दे ने क्या किया?

-मंदिर के दो कमरों को पर्दे ने अलग कर दिया।

-पर्दे ने पवित्र कक्ष को परम पवित्र कक्ष से अलग कर दिया।

-पर्दा किसका संकेत था?

-पर्दा ईश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव का प्रतीक था।

-परमेश्वर और मनुष्य को अलग क्यों किया गया?

-हमारे पाप के कारण।

-हमारे पाप के कारण, परमेश्वर और मनुष्य अलग हो गए थे, और महायाजक को छोड़कर कोई भी वर्ष में केवल एक बार परम पवित्र कक्ष में प्रवेश करने में सक्षम नहीं था।

-किसने ऊपर से नीचे तक परदा फाड़ा?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर ने दो हिस्सों में पर्दा क्यों फाड़ दिया?

-परमेश्वर ने यह दिखाने के लिए दो भागों में पर्दा फाड़ दिया कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच कोई और अलगाव नहीं था।

आइए पढ़ें मरकुस 15:39

39-और जब सूबेदार ने, जो यीशु के साम्हने वहां खड़ा था, उसकी दोहाई सुनी और देखा, कि वह कैसे मरा, तो उस ने कहा, निश्चय यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।

-जब सूबेदार, जो एक सौ सैनिकों का मुखिया था, ने यीशु को मरते देखा, तो वह जान गया कि यीशु ही उद्धारकर्ता परमेश्वर हैं।

आइए पढ़ें मरकुस 15:40-41

40-कुछ महिलाएं दूर से देख रही थीं। उनमें मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम और सलोमी थीं।

41-गलील में ये स्त्रियाँ उसके पीछे पीछे चलकर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं। और बहुत सी स्त्रियाँ जो उसके साथ यरूशलेम को आई थीं, भी थीं।

-ये महिलाएं थीं जो परमेश्वर में विश्वास करती थीं, और जानती थीं कि यीशु उद्धारकर्ता परमेश्वर थे।

आइए पढ़ें मरकुस 15:42-46

42-यह तैयारी का दिन था (अर्थात् सब्त से एक दिन पहले)। तो शाम होते ही,

43-अरिमथिया के यूसुफ, परिषद के प्रमुख सदस्य के रूप में, जो स्वयं परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे, साहसपूर्वक पीलातुस के पास गए और यीशु के शरीर के लिए कहा।

44- पीलातुस यह सुनकर चकित रह गया कि वह पहले ही मर चुका है। सूबेदार को बुलाकर उसने उससे पूछा कि क्या यीशु पहले ही मर चुका है।

45-जब उस ने सूबेदार से जान लिया, कि ऐसा ही है, तब उस ने लोय यूसुफ को दे दी।

46-तब यूसुफ ने सन का कोई कपड़ा मोल लिया, और लोय को उतारकर उस सनी में लपेटा, और चट्टान की बनी हुई कब्र में रखा। तब उसने कब्र के द्वार पर एक पत्थर लुढ़काया।

-अरिमथिया के जोसेफ एक अमीर आदमी थे जो मानते थे कि यीशु ही उद्धारकर्ता थे।

-यीशु की मृत्यु के बाद, यूसुफ पिलातुस के पास गया और यीशु के शरीर को दफनाने के लिए कहा।

-फिर, यूसुफ ने यीशु के शरीर को ले लिया और उसे अपनी कब्र में दफना दिया।

-जैसे परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से कहा था, उद्धारकर्ता को अमीरों के साथ दफनाया गया था।